International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(3): 402-405

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(3): 402-405
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 07-03-2017
Accepted: 08-04-2017

दुर्गा उपाध्याय
एस. एस. जीना परिसर अल्मोडा,
कु. वि. वि. नैनीताल, उत्तराखण्ड

Correspondence
दुर्गा उपाध्याय
एस. एस. जीना परिसर अल्मोडा,
कु. वि. वि. नैनीताल, उत्तराखण्ड

'शिशुपालवध' महाकाव्य में प्राकृतिक वर्णन कौशल

दुर्गा उपाध्याय

प्रस्तावना

संस्कृत वाङ्मय की अनेक विद्याओं में संस्कृत काव्यशास्त्र का विशिष्ट स्थान हैं कवि का कर्म काव्य है, सामान्य रूप में हम कह सकते हैं कि सार्थक शब्द समूह के द्वारा किसी विषय का सरलता, स्पष्टता एवं सुन्दरतापूर्वक चित्रण करना ही काव्य है। उसी काव्य के गूढ़ तत्वों को प्रतिपादित करने वाला अथवा काव्यसौन्दर्य की परख करने वाला ग्रन्थ काव्यशास्त्र है। काव्य की सभी विधाओं में वर्णन दृष्टिगोचर होता है, परन्तु महाकाव्य में वर्णन विशेष अनिवार्य तत्व है। जिसका उल्लेख अनेक साहित्याचार्यो ने किया है। किसी वस्तु के रंग-रूप आकार-प्रकार आदि की यथातथ्य अभिव्यक्ति 'वर्णन' है और उसी की रमणीय अभिव्यक्ति वर्णन कौशल है,

संस्कृत साहित्य में बृहत्त्रयी एवं पंचमहाकाव्यों में विशिष्ट स्थान रखने वाला एवं वीर रस प्रधान 'शिशुपालवध' महाकाव्य अलंकृतशैली प्रधान एवं कलापक्षीय प्रकर्षता के समावेश से युक्त महाकाव्य है। कलापक्ष के मूर्धन्य एवं मर्मज्ञ विद्वान महाकवि माघ ने प्राकृतिक वर्णनों को अत्यन्त कृत्रिमता तथा अद्भुद् कलावादिता के द्वारा अपने महाकाव्य मे स्थान दिया है।

किसी भी वस्तु के रंग-रूप आकार प्रकार का यथा तथ्य अभिव्यक्ति 'वर्णन' है उसी की सुन्दर अभिव्यक्ति वर्णन कौशल, प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में अनेक प्रकार के दृश्यो एवं वस्तुओं को देखता है मनोरम दृश्यों को देखकर साधारण मानव का हृदय भी मचलता है फिर भावुकहृदय कवि का कहना ही क्या? साधारण मानव की यह सौन्दर्यानुभूति सीमित रहती है, कुछ मानव अनुभूति तो करते है लेकिन उसे अभिव्यक्त करना वे नही जानते, इसके विपरीत काव्य में कवि की लेखनी तथा चित्र में चित्रकार की तूलिका वस्तु के सौन्दर्य को भावुकता तथा कल्पना के मनोरम सामञ्जस्य से कलात्मक रूप में प्रतिबिम्बित करती है, कवि वस्तु अथवा दृश्य के सौन्दर्याभिव्यक्ति के साथ ही उसके क्रिया कलापों को भी काव्य में सरस शब्दों के माध्यम से प्रस्तुत करता है, ''किसी भी वस्तु का वर्णन प्रस्तुत करने में कवि का लक्ष्य बिम्ब ग्रहण कराने से होता है, बिम्ब ग्रहण कराने का तात्पर्य संश्लिष्ट चित्रण द्वारा पाठक अथवा श्रोता को वस्तु स्थिति का मार्मिक प्रत्यक्षीकरण कराना है, न कि किसी वस्तु का क्रमवद्ध वर्णन करना'' [1]

काव्य की सभी विधाओं में दृश्य तथा श्रव्य में वर्णन दृष्टिगोचर होता है, महाकाव्य में वर्णन विशेष अनिवार्य तत्व है। जिसका वर्णन विश्वनाथ, भामह, दण्डी आदि साहित्याचार्यो ने महाकाव्य के स्वरूप निर्धारण में किया है यद्यपि वर्ण्य वस्तुओं की कोई सीमा नही है तथापि महाकाव्य में उद्यान, वन, पर्वत, समुद्र, सूर्योदय, चन्द्रोदय, षड्ऋतु प्रातः, मध्याहन, सन्ध्या, दिवस, वासर, नगर, देश, दीप इत्यादि का वर्णन आवश्यक है एवं कवि का निरक्षण जितना सूक्ष्म होगा वर्णन उतना ही सजीव एवं स्वाभविक होगा, काव्य में वर्णन के सरस रोचक एवं कलात्मक होना भी आवश्यक है। दण्डी ने काव्य में वर्णनों मे मौलिकता की अपेक्षा स्वाभाविकता को अधिक महत्व दिया है। काव्यप्रकाश में आचार्य मम्मट ने ''लौकोत्तरवर्णनानिपुणकविकर्म काव्य'' कह कर काव्य में वर्णनों के महत्व को प्रतिपादित किया है।

प्राकृतिक वर्णन

'प्रकृति शब्द 'प्र' उपसर्ग पूर्वक कृ धातु से क्तिन प्रत्यय के योग से बना है, सरल शब्दो में यह कहा जा सकता है कि सृष्टि के मध्य जिस किसी भी वस्तु के निर्माण में मानव का हाथ नही है सामान्यत: प्राकृतिक शब्द दो अर्थो में व्यवहृत किया जाता है प्रकृति अर्थात् मानव स्वभाव इसे अन्त: प्रकृति नाम से अभिहित किया जाता है। मानव हृदय में विद्यमान दयालुता, उग्रता, सौम्यता, विनम्रता, क्षमाशीलता, मधुरता इत्यादि सात्विक गुण क्रूरता आता स्वार्थ शोषण की भावना इत्यादि तामस्मिक गुण अन्त: प्रकृति के भिन्न रूप है। इस पृथ्वी पर अनेक ऐसी विशाल भव्य वस्तुऐं दृष्टिगत होती है जिनका निर्माण मनुष्य द्वारा सम्भव नही है सूर्य, चन्द्र, नदी पर्वत समुद्र पशु पक्षी आदि इनकी रचना ईश्वर द्वारा ही सम्भव है प्रकृति का मानव से घनिष्ट संबन्ध है प्रकृति मानव के समक्ष विभिन्न रूपों को प्रदर्शित करती है।

कभी सुख-दुख में साथ देनेवाली स्नेहमयी माता के समान प्रतीत होती है तो कभी निश्छल प्यार प्रदान करने वाली पत्नी के समान के दिखाई दती है। कभी पुष्प-वृक्षादि के माध्यम से संसार की क्षण भंगुरता का समाज को उपदेश देती है। प्रत्येक प्रात: काल मानव के हृदय में नयी आशा का संचार होता है, प्रात: काल मनुष्य सूर्य के उदय होते ही अपनी नयी दिनचर्या की शुरुआत करता है उसके हृदय में नयी आशाओं का संचार होता है चन्द्रमा रात को उदित होकर शालीनता एवं अपने कर्म में निरन्तर लगे रहने की प्रेरणा देता है विपत्ती के समय में मनुष्य सूर्य के उदय तथा अस्त होने की प्रक्रिया को देखकर धैर्यधारण करता है। जिस प्रकार दिन में सूर्य रात्री में चन्द्रमा आता है उसी प्रकार प्रत्येक दुख के बाद सुख की आशा लेकर मनुष्य निरन्तर अपने कार्य में लगा रहता है।

प्रकृति और मानव के सम्बन्ध के विषय में महादेवी वर्मा ने लिखा है

''दृश्य प्रकृति मानव जीवन को अथ से इति तक चक्रवात की तरह घेरे रखती है। प्रकृति के विविध कोमल सुन्दर कवरूप व्यक्त रहस्यमय रूपों के आकर्षण ने मानव की बुद्धि और हृदय को कितना परिष्कार और विस्तार दिया है इसका लेखा-जोखा करने पर मनुष्य प्रकृति का सबसे अधिक ऋणी है। वस्तुत: संस्कार क्रम में मानव जाती का भाव-जगत ही नहीं उसके चिन्तन की दिशाएं भी प्रकृति से विविध रूपों तक परिचय द्वारा तथा उससे उत्पन्न अनुभूतियों से प्रभावित है। यों तो धर्म, दर्शन साहित्य और कला इन सभी के प्रकृति चिन्तन को स्थान मिला है, किन्तु काव्यों में इसे सर्वाधिक महत्व प्राप्त हुआ है। इसका मुख्य कारण यह है कि काव्य का रचयिता कवि मानव की अपेक्षा अधिक संवेदनशील होता है और वह प्रकृति का विभिन्न दृश्यों से बहुत शीघ्र और अधिक अभिभूत होता है।

आधुनिक युग में मानव को शहरों मे निवास करना अधिक रुचिकर लगता शहरों में रेडियो, सिनेमा, टेलीविजन, इण्टरनैट उपलब्ध हैं। इत्यादि मनोरजन के अनेकों साधन मानव को उपलब्ध तो हो जाते है परन्तु यहां पर प्रकृति की नैसर्गिक आभा का अभाव है। शहरों में मनुष्य को इन सभी प्रकार के साधनों के उपलब्ध होने पर भी प्रकृति की गोद की रहते हुए भी सुखानुभूति नही होती, वह शहरों मे भी प्रकृति की इस नैसर्गिक आभा को पाने के लिए गुलदस्ते सजाना, पशु पक्षीओं को पालना गमलों, बगीचों में पुष्पो आदि को लगाना थकान दूर करने के लिए दूब पर लेटना, मन बहलाने के लिए उद्यानों मे जाना यह सब प्रकार के कार्य मानव के प्रकृति प्रेमी हृदय को प्रदर्शित करते है इसके विपरीत गावों में पूरे दिन भर अर्थात् सुदीर्घ दिवस में अथक परिश्रम से क्लान्त श्रमी सांयकालीन शीतल वायु के स्पर्श से थकान को भूलकर आनन्दित हो उठता है स्वास्थ्य वातावरण के साथ मे स्वस्थ जीवन यापन करता है। इस प्रकार प्रकृति का मानव जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध है।

कवि तथा काव्य का सम्बन्ध प्रकृति का काव्य के विशेष सम्बन्ध है क्योंकि चरम साधन हृदयाह्लादकता अर्थात आनन्द की प्राप्ति कराता है , कवि काव्य में अन्त: प्रकृति तथा बाह्य प्रकृति का सामञ्जस्य स्थापित करता है, कवि वाह्य प्रकृति से विश्व प्रेम तथा मानव प्रेम की भावना को ग्रहण करके काव्य के माध्यम से अन्त: प्रकृति की विकृतियों को दूर करने का प्रयास करता है। कवि या मानव के हृदय में प्रकृति का चिरस्थायी प्रभाव पड़ता है रंगबिरंगे फूल-'फल किसे आकर्षित नहीं करते नदियों की चंचल लहरें, वर्षा काल में मयूरों का नृत्य सभी को उल्लासित करता है। सावन-भादों के काले बादल वसन्त ऋतु की रीतिमा को देखकर स्वाभाविक हृदय आनन्दित हो उठते है परन्तु कवि की वाणी काव्य में अपनी सरस भाषा के माध्यम से प्रकृति की मनोहर तथा रमणीय सुषमा को प्रकट भी कर देती है।

वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक सभी कवियों ने अपने काव्य में प्रकृति की नैसर्गिक सुषमा का मनोरम चित्रण किया है। ऋग्वेद के इन्द्र वरुण पर्जन्य, सविता, उषा आदि सूक्त इसके उदाहरण है वहीं दूसरी ओर कालीदास, भवभूति, माघ, वाण, श्रीहर्ष आदि महाकवियों ने अपने काव्यों में प्रकृति की नैसर्गिक सुषमा का मनोरम चित्रण किया है। माघ का प्रकृति वर्णन कौशल अदभुत है। माघ रचित 'शिशुपालवध' महाकाव्य के लक्षणों को सर्वाधिक ग्रहण करने वाला महाकाव्य है कहा भी गया है ''काव्येषु माघ: कवि कालिदास अर्थात कवि की दृष्टि से कालिदास श्रेष्ठ है किन्तु काव्य के लेखन में माघ उत्कृष्ट है उन्होने कथानक की रोचकता में वृद्धि करने के लिए प्रकृति की सरसता तथा सुन्दरता का मनोरम चित्रण किया है। शिशुपाल वध के यद्यपि सभी वर्णन उत्कृष्ट हैं किन्तु चतुर्थ सर्ग में पर्वत, षष्ठ सर्ग में आवर्जक है। इसे अतिरिक्त महाकाव्य में समुद्र, नदी, सूर्य, चन्द्र इत्यादि का भी वर्णन मिलता है। महाकाव्य मे वर्णन किया है महाकाव्य में वर्णित दृष्यों तथा वस्तुओं का विवेचन इस प्रकार है -

पर्वत वर्णन

आकाश को स्पर्श करने को आतुर ऊंची ऊंची पर्वत श्रेणियों अपने में अनोखा आकर्षण रखती हैं प्रकृति का जैसा मनमोहक तथा निश्छल सौन्दर्य पर्वतों के अंचलो में छिपा है वैसा अन्यत्र दुर्लभा है। अतुल सौन्दर्य राशी को अपने में समाहित किये हुए ये पर्वत सजग प्रहरी के समान निश्चल खडे रहते है पवतों की गहन कन्दराओं में भयावहता के दर्शन होते हैं तो झरनों की ध्वनि मधुर संगीत उत्पन्न करती है बालसूर्य की किरणें सर्वप्रथम पर्वतो की गोद मे क्रीडा करती हैं। सौन्दर्य प्रेम कवि पर्वतों की सुन्दरता को चित्रित करने में सर्वत्र ही आगे रहें हैं महाकवि माघ ने शिशुपालवध महाकाव्य में पर्वतीय सौन्दर्य का ऐसा अद्भुद वर्णन किया है जिसके कारण माघ जगत प्रसिद्ध है। पर्वत वर्णन महाकाव्य में उस स्थल मे वर्णित जब श्रीकृष्ण अपनी

राजतरङ्गिणी सेना के साथ प्रस्थान कर रहे होते है तब वह मार्ग मे विविध प्रकार के धातुओं से युक्त बृहदाकारवाली पाषाण चटट्ानों के ऊपर चारों ओर से उठते हुए मेघों से सूर्य के मार्ग को रोकने के लिए पुनः तत्पर ऐसा विशाल पर्वत को देखते है। उस भव्य विशाल पर्वत को देखकर उत्कण्ठित श्रीकृष्ण का सारथी दारुक है उस रेवतक पर्वत का वर्णन करते हुऐ कहता है

बहुमूल्य रत्नों से भरे हुऐ इस पर्वत के शिखर इतने ऊंचे है कि वे सूर्य के समीपवर्ती दिखाई देते हैं।

उदयति तिततोर्ध्वरश्मिरज्जवहिमरुचौ हिमधाम्नि याति चास्तम
वहति गिरिरयं विलम्किघण्टा ह्रयपरिवारितवारणेन्द्रलीलाम।। [2]

अर्थात रैवतक पर्वत पर सूर्योदय का दृश्य का वर्णन करता हुआ कहता है लम्बी लम्बी और ऊपर की ओर रस्सी के समान फैली हुई किरणों वाले सूर्य के उदय एवं चन्द्रमा के अस्त होने के समय यह पर्वत लटकने वाले दो घटाओं से युक्त (स्वर्ण एवं रजत) गजराज के सदृश शोभा पा रहा है।

अन्यत्र श्रीकृष्ण से पर्वत की समानता करते हुए दारुक कहता है कि दूर्वाओं से आच्छादित स्वर्णमयी भूमिवाला यह पर्वत हरताल के सदृश पीतवर्ण के नवीन वस्त्रवाले आपकी तरह शोभा दे रहा है। कठोर होने पर भी पर्वत की कोमलता का वर्णन कवि ने इस प्रकार कियाा है-

अपशङ्कमङ्क परिवर्तनोचिता श्चलिताः पुरः पतिमुपेतुमात्मजाः।
अनुरोदितीव करुणेन पत्रिणां रितेन वत्सलतयैव निम्नाः।। [3]

अर्थात रौवतक पर्वत से निकलकर समुद्र तक जाने वाले नदियों मानो पिता की गोद में निःशङ्क क्रीडा करने वाली पुत्रीयां अपने पति के घर जा रही है पिता (रैवतक) पक्षियों के कलरव के माध्यम से रो रहे हैं। पिता का हृदय पुत्री को पतिघर भेजते समय पिघल ही जाया करता है वह चाहे कितना ही कठोर क्यों न हो अन्यत्र रैवतक पर्वत का भोग-भूमि के अतिरिक्त मोक्ष भूमि के रूप में भी वर्णन किया है। यथा -

मैत्र्यादिचित्त परिकर्मविदो विधाय क्लेश प्रहाणमिह लब्ध सबीज योगाः।
ख्यातिं च सत्त्वपुरुषान्यतयाधिगम्य वाञ्छन्ति तामपि समाधिभृतो निरोधद्धम्।। [4]

अर्थात जहां एक ओर यह पर्वतीय प्रदेश भोगभूमि है वही दूसरी ओर समाधि लगाए हुए सिद्ध पुरुषों का निवास स्थान होने से यह सिद्ध भूमि भी है । इस प्रकार कवि ने पर्वत की सुषमा का वर्णन करते हुए उसकी श्रेष्ठता तथा गरिमा का चतुर्थ सर्ग में भव्य वर्णन किया है।

ऋतु वर्णन

ऋतु वर्णन काव्य को रमणीयता प्रदान करता है रसों को उदीप्त करने के लिये ऋतु वर्णन अपेक्षित होता है। पृथ्वी नित्य नवीनता को धारण करती है कभी रंग बिरगे पुष्पों का परिधान पहन कर नव वधू के समान रमणीय तथा मनोहर प्रतीत होती है तो कभी सूर्य के तीव्र ताप द्वारा संतप्त पथिक तथा पशु-पक्षी शीतल छाया का आश्रय लेते हैं। कभी वसुन्धरा नवीन दुर्वाकुरों से व्याप्त हो जाती है, कभी वातावरण सुहावना तथा मनमोहक हो जाता है तो कभी नदियों तीव्र वेग से प्रवाहित होती हैं, चन्द्रमा की निर्मल चांदनी के प्रसार वाला तारांकित स्वच्छ नीलाकाश अपूर्व शोभा को धारण करके सबके मनों को प्रसन्न करता है तो कभी सरोवरों में कमल आदि पुष्प मुरझा जाते हैं हिमाच्छादित पर्वतशिखर किसके मन की शोभा किसको प्रसन्नता नहीं करती इस प्रकार क्रमशः ग्रीष्म, वसन्त, वर्षा, शरद, हेमन्त तथा शिशिर षड्ऋतुओं का क्रम चलता है षडऋतु वर्णन को लक्षणकर्ताओं ने महाकाव्य के लिए आवश्यक बताया है। शिशुपालवध महाकाव्य में श्रीकृष्ण भगवान् की रैवतक पर्वत पर रुकने की इच्छा जानकर उनकी सेवा के लिए षड्ऋतुओं का एक साथ वहां प्रादुर्भाव हुआ काव्य के आधार पर ऋतु वर्णन प्रस्तुत है

'वसन्तऋतु के आगमन पर विभिन्न वृक्षों तथा लताओं ने नवपल्लवो से सुसज्जित होकर सुरभित पुष्पों को धारण कर लिया शीतल मन्द और सुवासित समीर बहने लगता है वसन्त काल में मधुककर गुञ्जन का वर्णन कवि ने इस प्रकार किया है-

मधुरया मधुवोधितमाधवी मधुसमृद्धिसमेधित मेधया।
मधुकराङ्गनयाा मुहुरुन्मद ध्वनि भृता निभृताक्षरगुञ्जरो।। [5]

वसन्त ऋतु के वर्णन के पश्चात कवि ग्रष्म ऋतु का वर्णन करते हुए कहते हैं कि ग्रीष्म ऋतु के आने पर शिरीष तथा नवमल्लिका के पुष्प विकसित हो उठे अन्यत्र वर्षाऋतु का वर्णन करते हुऐ कहते है कि ''वर्षाऋतु मे चमकती हुई विद्युत का तथा गर्जन करने वाले मेघों से भी भय-भीत होती हुई कामार्ता रमणियां अपने प्रियतमों के पास जाने लगीं बादलों से बरसे हुए जल को प्राप्तकर मयूरवृन्द एकाएक आनन्द से भर गये नदियां बह निकली और भ्रमरियां सायं काल के दीपक की भांति लालरंग के कन्दली के फलों पर भ्रमरों के साथ रमण करने लगीं'' शरद का वर्णन करते हुऐ माघ एक सामान्य उक्ति भी दे देते है कि समय किसी को दुर्बल या प्रबल बनाता है। शरद ऋतु में मयूर की ध्वनि कठोर हो गयी जबकि वर्षा में वही मधुर थी हंस की ध्वनि जो वर्षा ऋमे कर्कश रहती है अब रमणीय हो गयी है।

समय एव करोति वलाबलं प्रणिगदन्त इतीव शरीरिणम्।
शरदि हंसरवाः परुषीकृत स्वरमयूरमयू रमणीयताम्।। [6]

हेमन्त का वर्णन करते हुए कहते हैं - ''हेमन्त के आगमन पर जलाशयों का जल जम जाने के कारण कम हो गया कामी जन विविध प्रकार की सुरतक्रीडा मे प्रवृत हो उठे'' ''शिशिरऋतु के आने पर सूर्य किरणों का तेज मन्द पड़गया रमण्यिां प्रियतमों का अलिंगन कर पयोधरस्थ अपनी उष्णता को सार्थक करने लगी'' इस प्रकार महाकवि माघ ने षष्ठ सर्ग में समस्त ऋतुओं का भव्य आकर्षक वर्णन करके काव्य में चार चांद ला दिये हैं।

प्रभातवर्णन

प्रभात वर्णन यह प्रभात की ही महिमा है जब मनुष्य अपने नित्य नये कार्यो को करने लगता है, एकादश सर्ग कवि माघ की काव्य कुशलता को प्रस्तुत करता है, प्रभात वर्णन का प्रयोग कृष्ण को जगाने के लिए गाये जाने वाले प्रभातगीत के रूप में हुआ है। माघ के प्रभात वर्णन का उदाहरण दृष्टव्य है-

प्रहरकमपनीस स्वं निदद्रिासताच्चैः
प्रतिपदमुपहूतः केनाचिज्जागृहीति।।
मुहुरविशदवर्णा निद्रया शून्यशून्यां
ददपि गिरियन्तर्बुध्यते नो मनुष्यः।। [7]

अर्थात एक पहरेदार ने अपना पहरा पूरा कर दिया है। वह अब सोना चाहता है। इसलिए दूसरे पहरेदार को जिसकी बारी आयी है उसको बार बार उसको जगा रहा है। ''उठो जागो'' किन्तु दूसरा व्यक्ति नीदं में अस्पष्ट स्वर में उत्तर तो दे रहा है, पर भीतर से जागता नहीं था इसी प्रकार अन्यत्र प्रभात में प्रसन्न और दुखी होने वाले प्राकृतिक पदार्थों का वर्णन कवि ने किया है यथा-

कुमुदवनमपाश्रि श्रीमदम्भोजष्ण्डं
त्यजति मुदमुलूकः प्रीतिमांश्चक्रवाकः।
डदयकहिमराश्मिर्याति शीतांशुरस्तं
ळत-विधिलसितानां ही विचित्रो विपाकः।। [8]

अर्थात प्रभात होने से कुमुद-वन इस समय श्रीहीन हो गया है कमल समूह शोभामय बन गया गचा है। उल्लू का आनन्द समाप्त हो रहा है किन्तु चक्रवाक (अपनेप्रिया के समागम से) प्रसन्न हो रहा है सूर्य का उदय और चन्द्रमा का अस्ताचल गमन साथ साथ हो रहा है। दुष्ट (हत) विधाता की चेष्टाओं का विचित्र परिणाम है आश्चर्य की बात है।

समुद्रवर्णन

मुक्ता मणि सीपी शैवाल आदि के आगार गहराई वाले अथाह जलाराशी के स्वमी रत्नाकार का उल्लेख महाकाव्य के तृतीय सर्ग मे है उस समय हुआ जब श्रीकृष्ण द्वारकापुरी से प्रस्थान करते है वह द्वारकापुरी समुद्र के मध्य में अपनी सुवर्णमयी चहारदीवरी की शोभा से अलंकृत थी उसका प्रतिविम्ब समुद्र क`जल में स्वर्ग की छाया के तुल्य परिलक्षित हो रहा था।

नदी वर्णन

रमणीय धरातल की आभूषणस्वरूप पुण्य सलिल सरिताए काव्य में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। प्रसंग किसी नगर की सुन्दरता समृद्धता का हो अथवा किसी दुर्गम पर्वत का या हरी भरी घाटियों का पर्वतो के अंचलो से उद्भूत नदियों का उल्लेख काव्य में हो जाता है महाकवि माघ ने द्वादश सर्ग में यमुना नदी को पार करने का सुन्दर वर्णन किया है। इसके अतिरिक्त कवि ने महाकाव्य में जल विहार संध्या चन्द्रोदय रात्री विहार का भी वर्णन किया है।

संस्कृत साहित्य में एकमात्र माघ ही ऐसे कवि है जिन्होने अपने काल तक विकसित महाकाव्यों के सभी उत्कृष्ट गुणों का समावेस अपनी रचना में किया है। शिशुपालवध महाकाव्य के लक्षणों को सर्वाधिक ग्रहण करने वाला तहाकाव्य है इसीलिए कहा जाता है ''काव्येषु माघः कवि कालिदासः '' महाकवि माघ के महाकाव्य में प्राकृतिक वर्णन के अन्तर्गत जो रमणीय दर्शन होते है एवं सर्वत्र स्वाभाविकता दृष्टिगोचर होती है ऐसा लगता मानो कवि स्वयं प्रकृति के निकट सम्पर्क मे रहा हो एक-एक प्रकृति वर्णन उनका स्वयं का भोगा हुआ सा प्रतीत होता है अतः माघ ही एक मात्र ऐसे कवि हैं जो उपमा अर्थगौरव और पद लालित्य की त्रिवेणी में एक साथ सर्वथा स्नात है। माघ का प्रकृतिक वर्णन कौशल उद्भूत है उनको पड़कर हमारे नेत्रों के समक्ष चित्र सा अंकित हो जाता है।

संदर्भ ग्रन्था

1. रामेश्वर लाल कविता मे प्रकृति चित्राण पृष्ठ संख्या 18
2. विश्वनाथ, साहित्य दर्पण 6/323
3. दण्ड काव्यादर्श 1/16, 17
4. भामह, काव्यालंकार 1/23
5. मम्मट, काव्यप्रकाश 1/2
6. प्रक्रियते कार्यादिकमनया प्र कृ क्तिन्। शब्दकल्पद्रुम 3/पृ. सं. 242
7. महादेवी वर्मा साहित्यिक निबन्ध पृ. सं. 482
8. माघ, शिशुपालवध 4/20
   पूर्वत 4/47
   पूर्वत 4/55
   पूर्वत 6/20
   पूर्वत 6/44
   पूर्वत 11/4
   पूर्वत 11/64